7

यीशु की कलीसिया: पदनाम

आपका बपतिस्मा होने पर, प्रभु आपको अपनी कलीसिया में मिला लेगा। उसके बाद आपको प्रभु की कलीसिया के एक सदस्य के रूप में कार्य करना होगा। क्योंकि आज बहुत सी कलीसियाओं का अस्तित्व है,[1] इसलिए यीशु की कलीसिया को पहचानना आसान नहीं है। अगले कुछ पाठों में हम नये नियम में बताई गई कलीसिया की विशेषताओं का अध्ययन करेंगे। हर एक धार्मिक संगठन का विशेषताओं के आधार पर मूल्यांकन होना चाहिए।

पहले हम वचन के अनुसार पदनामों पर विचार करते हैं। हम देखेंगे कि सम्पूर्ण तौर पर बाइबल कलीसिया को कैसे सम्बोधित करती है, फिर कलीसिया के एक-एक सदस्य को क्या पदनाम दिए गए हैं।

पदनाम: पृष्ठभूमि

निश्चित पदनामों पर विचार करने से पहले मुझे इसकी पृष्ठभूमि में कुछ बातें कहनी हैं। पहले, ध्यान दें कि मैं ''नामों'' के बजाय ''पदनाम'' का उपयोग करता हूं। ऐसा मैं इसलिए करता हूं क्योंकि नये नियम में, कलीसिया को कोई विशिष्ट नाम नहीं दिया गया।[2] नियम के अनुसार कई भाषाओं में विशिष्ट नाम बड़े अक्षर से आरम्भ होते हैं।

''पदनाम'' और ''नाम'' में क्या अन्तर है ? आप अवश्य ही यह पुस्तक कहीं बैठकर पढ़ रहे होंगे। अपनी बात को चित्रित करने के लिए मान लेते हैं कि आप एक कुर्सी पर बैठे हैं। यदि आप इसे ''गद्दी'' अथवा ''कुर्सी'' या इसके समान कोई और चीज़ कहें तो आप केवल वही कह रहे हैं जो यह है। यह एक व्याख्यात्मक शब्द अर्थात एक पदनाम है। तथापि, आप इसे नाम भी दे सकते हैं। मैं आपको यह बताना चाह रहा हूं कि नया नियम कलीसिया के लिए विशिष्ट नाम नहीं बल्कि पदनाम का उपयोग करता है। कलीसिया के सम्बन्ध में प्रयुक्त सभी शब्दों से केवल यह पता चलता है कि यह क्या है।

क्योंकि यह सत्य है, इसलिए प्रभु की कलीसिया के लिए जब भी शब्द ''church''[3] का इस्तेमाल करना होता है, मैं छोटे ''c'' का ही इस्तेमाल करता हूं। मैं इसे कोई बहस का विषय नहीं बनाना चाहता,[4] परन्तु मैं यह ज़ोर देना चाहता हूं कि मैं पदनाम का इस्तेमाल कर रहा हूं, विशिष्ट नाम का नहीं।

दूसरा, नियम के अनुसार कलीसिया के लिए पदनाम मसीह और उसके पिता को महिमा देने के लिए हैं। परमेश्वर ने यीशु को ''वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है'' (फिलिप्पियों 2:9)। साम्प्रदायिक नाम आम तौर पर उस सम्प्रदाय की विशेषता, उसके संस्थापक, या किसी शिक्षा को बढ़ावा देते हैं। केवल प्रभु को ही महिमा दी जानी चाहिए। पतरस ने कहा कि ''किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों 4:12)।

पदनामः पूरे का पूरा

इस सबको ध्यान में रखते हुए, आइए पहले पूर्ण रूप से कलीसिया के पदनामों को देखें। कलीसिया को नये नियम में ज़्यादातर केवल ''कलीसिया'' ही कहकर सम्बोधित किया गया है (प्रेरितों 5:11; 8:1, 3; 9:31; 11:22, 26)। इसलिए मैं अपने लेख और शिक्षा में आमतौर पर कलीसिया ही कहता हूं।

अक्सर परमेश्वर का वचन भी कलीसिया को सम्बोधित करने के लिए वर्णनात्मक शब्द ''परमेश्वर की कलीसिया'' (प्रेरितों 20:28; ASV में ''प्रभु की कलीसिया'')[5] का उपयोग करता है। इब्रानियों 12:23 कलीसिया को ''पहिलौठों की कलीसिया''[6] कहता है। हिन्दी की बाइबल में शब्द ''परमेश्वर की कलीसिया'' (1 कुरिन्थियों 1:2; 15:9; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलतियों 1:13; देखिए 1 तीमुथियुस 3:15) का कई बार प्रयोग हुआ है।

रोमियों 16:16 में पौलुस ने अपने क्षेत्र में कई मण्डलियों की बात की जब उसने कहा, ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।''[7] ''मसीह की कलीसियाएं'' कोई साम्प्रदायिक नाम नहीं है, बल्कि एक वर्णनात्मक वाक्यांश है। ''मसीह की'' का अर्थ है ''जो मसीह की है।'' ''मसीह की कलीसियाओं'' का अर्थ है ''वे कलीसियाएं जिनका सम्बन्ध मसीह से है।'' इसी अर्थ का एक वाक्यांश है ''मसीह की कलीसिया।'' जब मैं शब्द ''मसीह की कलीसिया'' या ''मसीह की कलीसियाओं'' का प्रयोग करता हूं तो मेरा भाव उस कलीसिया या कलीसियाओं से होता है, जिनका सम्बन्ध मसीह से है।

पदनामः व्यक्तिगत रुप से

कलीसिया के निजी सदस्यों को किस प्रकार से सम्बोधित किया जाता था? निजी सदस्यों को सम्बोधित करते हुए नये नियम में कई प्रकार के शब्द हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- ''भाई''[8] व ''बहनें'' (प्रेरितों 6:3; 9:30; रोमियों 16:1; याकूब 2:15)। इन शब्दों का प्रयोग बहुत ही आम है। ये पारिवारिक सम्बन्ध (आत्मिक परिवार) की ओर संकेत करते हैं।
- ''पवित्र लोग'' अथवा ''सन्त (अंग्रेज़ी बाइबल)'' (रोमियों 1:7; 8:27; 12:13; 15:25)। यहां ''पवित्र लोग'' अथवा ''सन्त'' का अर्थ ''पाप रहित''

नहीं बल्कि अलग किए हुए है। बपतिस्मे के समय परमेश्वर एक मसीही को अपनी विशेष प्रजा के रूप में पृथक कर लेता है (तीतुस 2:14)।

- ''चेला'' (प्रेरितों 6:1, 2, 7; 9:1)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में मसीह के अनुयायियों के लिए इस शब्द का पर्याप्त प्रयोग हुआ है। इस शब्द का उपयोग ''अनुयायी'' अर्थात ''सीखने वाला''[9] के लिए होता है।

कलीसिया के सदस्यों के लिए विलक्षण पदनाम शब्द ''मसीही'' है। लूका ने कहा कि ''चेले सबसे पहले अन्ताकिया में ही मसीही कहलाए'' (प्रेरितों 11:26)। पौलुस के अग्रिप्पा को प्रचार करने के बाद राजा ने उससे कहा, ''तू थोड़ा ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?'' (प्रेरितों 26:28)। पतरस ने लिखा, ''पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए तो लज्जित न हो, पर इसके लिए परमेश्वर की महिमा करे'' (1 पतरस 4:16)।

मैंने पहले बताया था नये नियम के पदनामों से यीशु और परमेश्वर को महिमा मिलती है। ''मसीह'' शब्द में यह स्पष्ट है: कि एक ''मसीही'' का दो-तिहाई से अधिक भाग ''मसीह'' है।

''मसीही'' शब्द यूनानी शब्द का हिन्दीकरण है।[10] मूल यूनानी ''मसीह'' के लिए शब्द को इस प्रकार समाप्त करता है जिससे स्वामित्व का पता चलता है। ''मसीही'' का अक्षरश: अर्थ है ''जो मसीह का है।''

मसीही = जो मसीह का है

व्यक्तिगत आधार पर इस शब्द का वही अर्थ है जो *सामूहिक* आधार पर ''मसीह की कलीसिया'' का है। ''मसीही'' का अर्थ वह व्यक्ति है जिसका सम्बन्ध यीशु मसीह से है अर्थात मसीह का है, जबकि ''मसीह की कलीसिया'' का अर्थ वह कलीसिया है जो मसीह की है।

जब मुझसे पूछा जाता है कि मैं किस डिनोमिनेशन का हूं तो मैं उत्तर देता हूं, ''मैं एक मसीही हूं।'' कई बार ज़ोर देकर मुझसे पूछा जाता है: ''पर तुम किस धार्मिक संगठन के सदस्य हो?'' फिर, मैं यह कह देता हूं, ''मैं उस कलीसिया का सदस्य हूं जो मसीह की है'' अर्थात ''मसीह की कलीसिया'' अर्थात ''उस कलीसिया का जो यीशु मसीह की है।'' हर बार मैं अपने प्रभु को महिमा देना चाहता हूं।

सारांश

मनुष्यों द्वारा दिए नामों को अपनाना धार्मिक फूट में योगदान देना है। यह बात आज भी सत्य है और बाइबल के दिनों में भी सत्य थी। पौलुस द्वारा कुरिन्थुस की कलीसिया को लिखने के समय, यह विभिन्न गुटों में बंटनी आरम्भ हो गई थी:

> हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है, उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अप्पुलोस[11] का, कोई कैफा[12] का, कोई मसीह का कहता है (1 कुरिन्थियों 1:10-12)।

''पौलुस का'' और ''अप्पुलोस का'' के जैसे वाक्यांश स्वामित्व का पता देते हैं-जैसे पहले, रोमियों 16:16 के सम्बन्ध में बात की गई थी। उनका अक्षरश: अर्थ है, ''मैं पौलुस का हूं,'' ''मैं अप्पुलोस का हूं,'' वगैरह-वगैरह। आज हम इसे ऐसे कहेंगे, ''मैं पौलुसवादी हूं'' या ''मैं अप्पुलोसवादी हूं।'' पौलुस ने अपनी पहचान इस प्रकार दिखाने वालों को यह कहकर लज्जित किया, ''क्या मसीह बंट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?'' (1 कुरिन्थियों 1:13)। मनुष्य के पाप के लिए केवल मसीह को ही क्रूस पर चढ़ाया गया (1 कुरिन्थियों 1:23)। विश्वासियों को मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाता है (प्रेरितों 2:38); इसलिए, उन्हें केवल उसी का नाम ही पहनना चाहिए।

मुझे गलत मत समझें: सही पदनाम अपने आप में पर्याप्त नहीं है। मैं अपनी गाड़ी पर ''मर्सिडीज़ बेन्ज़'' लिख तो सकता हूं परन्तु इससे यह मर्सिडीज़ बेन्ज़ नहीं बन जाएगी।[13] फिर भी वचन के अनुसार पदनाम होना आवश्यक है। याद रखें कि पतरस ने मसीह के नाम के सम्बन्ध में कहा, ''और किसी के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों 4:12)। उसने बाद में लिखा कि हम इस नाम में ''परमेश्वर की महिमा करें'' (1 पतरस 4:16)।

पाद टिप्पणियां

[1]लोगों के साथ अध्ययन करते हुए मुझसे अक्सर पूछा जाता है, ''यदि बाइबल के दिनों में केवल एक ही कलीसिया थी, तो इतनी कलीसियाएं कहां से आ गईं?'' अथवा ''इतने सारे सम्प्रदाय क्यों हैं?'' इसका सरल सा उत्तर यह है कि मनुष्य सच्चाई से दूर चला गया है, बिल्कुल वैसे ही जैसे भविष्यवाणी की गई थी। (पढ़िए प्रेरितों 20:29, 30; 1 तीमुथियुस 4:1-3; 2 तीमुथियुस 4:1-4.) [2]नियम के अनुसार, कई भाषाओं (जैसे अंग्रेज़ी) में एक विशिष्ट नाम बड़े अक्षर के साथ आरम्भ होता है। [3]एक अपवाद है, जब ''church'' शब्द को किसी वाक्य या शीर्षक के पहले शब्द के रूप में इस्तेमाल किया जाता है (जैसे किसी पाठ के शीर्षक में)। [4]मैं इसे कोई बहस का विषय नहीं बनाना चाहता हूं क्योंकि नये नियम के सभी आरम्भिक लेखों में या तो बड़े अक्षरों का प्रयोग किया गया है या सभी छोटे अक्षरों का। [5]संदर्भ हमें बताता है कि यहां पुत्र को परमेश्वर कहा गया है। [6]इस शब्द का अर्थ है ''कलीसिया जो पहलौठों [अर्थात मसीहियों] से बनती है।'' [7]रोमियों 16:16 के आरम्भ में, ''आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो'' है। उस समय पुरुष पुरुषों को और महिलाएं महिलाओं को चुम्बन के साथ सलाम करती थीं (जैसा कि संसार के कई भागों में अभी भी है)। एक दूसरे को चुम्बन के साथ सलाम करना कोई आज्ञा नहीं है। ज़ोर ''पवित्र'' शब्द पर दिया गया है: जब आप एक

दूसरे से गर्मजोशी से मिलते हैं, तो यह *मन से होना चाहिए*। संसार के जिस भाग में मैं रहता हूं वहां हम कह सकते हैं कि ''एक दूसरे को मन से हाथ मिलाकर सलाम करो।'' [8]नये नियम में ''भाई'' का बहुवचन ''भाइयो या भाइयों'' है। [9]''चेला'' *किसी* के अनुयायी को कहा जा सकता है। संदर्भ तय करता है कि अनुयायी मसीह का ही है। [10]''हिन्दीकरण'' का अर्थ है कि मूल यूनानी शब्द को ही हिन्दी का शब्द बना दिया गया है।

[11]अप्पुलोस एक प्रचारक था जिसने कुरिन्थुस के इलाके (जो अखाया में था) में कुछ देर काम किया। (देखिए प्रेरितों 18:27, 28.) [12]कैफा प्रेरित पतरस का दूसरा नाम है (यूहन्ना 1:42)। [13]मर्सिडीज़ बेन्ज़ एक *बहुत* महंगी कार है।